SHIV SHAKTI

International Journal in Multidisciplinary and Academic Research (SSIJMAR)

Vol. 7, No. 2, February 2018 (ISSN 2278 – 5973)

शोधकर्ता

सूरज कुमार वशिष्ठ

SURAJ KUMAR VASHISHT

Reg.No.) 5018102100214002

RESEARCHER - HIMALAYAN UNIVERSITY

निर्देशक

डॉ.विनय कुमार तिवारी

HIMALAYAN UNIVERSITY

Takar Complex ,Naharlagun

ITA NAGAR -791110 (ARUNACHAL PRADESH)

''महाभाष्य में पस्पशाह्निक''

सम्पूर्ण महाभाष्य कुल 85 आह्निकों मे विभक्त है। 'आह्निक'शब्दका अर्थ है-एक दिनमे अधीत अंश। ग्रन्थकी शैली भी इसी प्रकार की है मानों गुरु अपने शिष्यो ंको विद्या-भ्यास करवा रहा हो। व्याकरण शास्त्रके मूल सिद्धान्तों को सरलतम रुपमे ं हृदयंगम कराने की दृष्टिसे यह शैली अत्यन्त आकर्षक,रोचक तथा उपयुक्त है। पस्पशाह्निक इस विशाल ग्रन्थका प्रथम आह्निक है, जिसे वस्तुतः सम्पूण 'ग्रन्थकी प्रस्तावना कहा जा सकता है। 'पस्पश'शब्द प्रारम्भ अथवा उपोदघात के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। शिशुपालवधम् मे ं पस्पशाह्निक के विना शब्दविद्या की शोभाहीनता से की गईं है- "शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा" एवं च प्रकारान्तर से महाकाव्य का यह प्रसंग पस्पशाह्निक के महत्व को भी स्पष्ट कर पाने मे कृतकार्य हुआ है। व्याकरणशास्त्र लौकिक और वैदिक उभयधि शब्दो के साधुत्व का अनुशासन करता है। अखण्ड और नित्य स्फोटकरुप शब्दब्रह्म की संसिद्धि वैयाकरणों को अभीष्ट है। तदनन्तर व्याकरण- शास्त्र अथवा व्याकरणाध्ययन के मुख्य एवं गौण प्रयोजनों का अन्वाख्यान किया गया है। वेदो की रक्षाके लिए तो व्याकरणाध्ययन अनिवार्य है । आगम "शास्त्र भी अथवा व्याकरणाध्ययनका प्रयोजक है ं- रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरण ं। आगमः खल्वपि। ब्राह्मणेन निष्कारणों धर्मः षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च । शास्त्रका विषयभूत यह शब्दोंपदेश साधुशब्दों, असाधुशब्दो ं तथा साधु असाधु उभयविध शब्दो के उपदेश को लेकर भी किया जा सकता है। शब्दका अर्थ आकृति भी है और द्रव्य भी। पाणिनी ने इन दोनो को ही लक्ष्य करके सूत्रो ंका निर्माण किया है। क्योकि किसी एक पक्षको

अंगीकार करने से व्याकरणशास्त्रमे ं सर्वत्र व्यवस्था नही हो सकती । जातिको पदाथ ं मानकर''सरुपाणामेकशेष एकविभक्तौ'' इत्यादि सूत्रों का उपदेश किया गया है। परन्तु जाति जहाँ पदार्थ होती है वहाँ जातिका क्रिया भी अन्वय न हो सकने के कारण व्यक्तिका जाति द्वारा बोध होता है और जहाँ व्यक्तिपरक निर्देश होता है। वहाँ जातिका उपलक्षक के रुपमें बोध होता है। मीमांसा और न्यायमे ं शब्द पर स्थूल दृष्टिसे विचार किया गया है। मीमांसक की दृष्टिमें पद और वाक्य सब वर्ण रुप ही है। अतः शब्द वर्णात्मक और नित्य है। न्यायदर्शन को तो शब्दकी नित्यता भी स्वीकार नही क्योकि यह श्रुयमाण ध्वनि को ही शब्द मानता है। पतञ्जलिने शब्दनित्यत्व और अनित्यत्व के प्रश्नको व्याडिप्रमाण कहकर छोड दिया है। यद्यपि पाणिनी का शास्त्रशब्दनित्यत्व की स्थिति को ही स्वीकारके चलता है। व्याडिकृत संग्रह नामक ग्रन्थमें यह सिद्ध किया गया है कि शब्दको चाहे नित्य माना जाये तथा अनित्य दोनो ही परिस्थितिमें शब्दानुशासन अनिवार्य है। यह व्याडि व्याकरण के दार्शनिक सिद्धान्तोके प्रतिपादक संग्रह नामक ग्रन्थ के प्रणेता थे उनका यह ग्रन्थ आज उपलब्ध नही होता।

www.ssijmar.in